|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 29. Mai 2023 | | |
| **Pfingstmontag A** | | |
| Erste Lesung: Apg 10, 34-35.42-48a oder Ez 36, 16-17a.18-28; Zweite Lesung: Eph 4, 1b-6 | | |
| Evangelium: Joh 15, 26 -16, 3.12-15 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 348, 1+4+5 | Nun bitten wir den Heiligen Geist |
|  | GL 347, 1+3+4 | Der Geist des Herrn |
|  | GL 351, 1+3+4+6 | Komm, Schöpfer Geist |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 156 | Kyrie eleison |
|  | GL 165 | Send uns deines Geistes Kraft |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 171 | Preis und Ehre |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 117, 1-2 |  |
|  | Kehrvers: GL 454 | Geht in alle Welt |
|  | oder |  |
|  | GL 346, 1-3 | Atme in uns, Heiliger Geist |
|  | GL 619, 1+2 | Alles, was Odem hat |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Komm, Heiliger Geist,* |  |
|  | *Erfülle die Herzen deiner Gläubigen* | |
|  | *und entzünde in ihnen das Feuer deiner Liebes!* | |
|  |  |  |
| Fürbitt-Ruf: | GL 645, 3 | Sende aus deinen Geist |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 764, 1+2+5 | Send deinen Geist |
|  | GL 767, 1-4 | Dein Geist weht, wo er will |
|  | GL 710 | Unser Leben sei ein fest |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 194 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 208 | Christe, du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 468 | Gott gab uns Atem |
|  | GL 456, 2+4! | Jesus, unser Bruder |
|  | GL 453, 1-4! | Bewahre uns Gott |
|  | GL 766, 1-3 | Komm, Heilger Geist |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 389, 1-3! | Dass du mich einstimmen lässt |
|  | GL 395, 1-3 | Den Herren will ich loben |
|  | GL 347 | Der Geist des Herrn |